Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ram Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 09/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,

Topic -

CLASSIFICATION SYSTEM:
DSM-5

परिचय *(Introduction)*

हम सब जानते है कि व्यक्ति तथा उसके परिवारजनों के जीवन पर मनोवैज्ञानिक विकारों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ सकता हैं। इनसे उनके व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षणिक तथा व्यवसायिक कामकाज प्रभावित हो सकते हैं। मानसिक विकारों से जुड़े दोष तथा पर्याप्त प्रशिक्षित मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की अनुपलब्धता के कारण भी समस्या और भी बढ़ जाती है। इसलिए, इनका सही निदान करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि निदान, विकार के लिए पर्याप्त मूल्यांकन तथा उचित उपचार / हस्तक्षेप भवन की आधारशिला / नींव है। यदि आधारशिला ही सही तरीके से नहीं रखी जाएगी तो भवन तो अन्ततः ढह ही जाएगा। अतः विशेषज्ञों / शोधकर्ताओं में उचित तथा समान निदान सुनिश्चित करने के लिए, मनोवैज्ञानिक विकारों की समान वर्गीकरण प्रणाली का होना अति आवश्यक है। जिस प्रकार हमारे पास प्रशासन, अंक निर्धारण तथा परीक्षण अंकों की व्याख्या में एकरूपता लाने के लिए, मानकीकृत मनोवैज्ञानिक उपकरण हैं ठीक उसी तरह मानसिक विकारों के निदान में शुद्धता तथा एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए एक मानक वर्गीकरण प्रणाली भी है। जिससे रोगी के लक्षणों को विशिष्ट वर्गीकरण प्रणाली को निर्दिष्ट करके निदान किया जाता है। यह वर्गीकरण प्रणाली आधार के रूप में कार्य करती है और निदान की विश्वसनीयता भी सुनिश्चित करती है। असामान्यता का वर्गीकरण करने के लिए वस्तुतः
'चार डी',
विचलन **(Deviance),**
शिथिलता **(Dysfunction),**
संकट **(Distress)** एवं
खतरा **(Danger)** का उपयोग किया जाता है। वैकल्पिक रूप से, इसका वर्गीकरण सामाजिक मानदंडों से विचलन की गंभीरता,सांख्यिकीय दुर्लभता, व्यक्तिगत संकट या प्रतिकूली व्यवहार के आधार पर किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिक विकारों का वर्गीकरण डीएसएम-5 (DSM-5) तथा आईसीडी-11 (ICD-11) जैसी प्रणालियों का उपयोग करके भी किया जाता है, जो उन्हें चिंता विकार मनोदशा विकार एवं मनोवैज्ञानिक विकार जैसी प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं। वर्गीकरण प्रणाली सूचनाओं को अवलोकनों के आधार पर समूह/श्रेणियों में व्यवस्थित रखने की व्यवस्था है। असामान्य मनोविज्ञान में, वर्गीकरण प्रणाली एक मानक प्रदान करती है जिसका उपयोग व्यक्ति के व्यवहार तथा मनोवैज्ञानिक कार्यप्रणाली की तुलना करने के लिए किया जा सकता है ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि किसी व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक विकार है या नहीं।

कारसन, बचर एवं मिनेका के अनुसार, असामान्य मनोविज्ञान में वर्गीकरण को कु-अनुकूलित व्यवहार की सार्थक उप किस्मों को सीमाबद्ध करने के प्रयास के रूप में परिभाषित किया गया है।"

असामान्य मनोविज्ञान में उपयोग की जाने वाली इस वर्गीकरण प्रणाली का उद्देश्य विकारों के विषय में उपयोग की जाने वाली भाषा को मानकीकृत करके चिकित्सकों एवं - शोधकर्ताओं के मध्य समझ तथा संचार को आसान बनाना है। ये प्रणालियाँ विकारों के निदान, रोग का निदान एवं उपचार के बारे में सुसंगत तथा विश्वसनीय शोध की भी अनुमति देती हैं। जिसमें डीएसएम-5 (DSM-5) संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे - लोकप्रिय वर्गीकरण प्रणाली है, जबकि आईसीडी-11 (ICD-11) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग की जाने वाली एक और लोकप्रिय प्रणाली है।

वर्तमान में, मानसिक विकारों की व्यापकता पर शोध रिपोर्ट करते समय डीएसएम-5 और आईसीडी-11 का परस्पर उपयोग किया जा सकता है। इन वर्गीकरण प्रणालियों के आधार पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं। हालाँकि, इन दोनों वर्गीकरण प्रणालियों की अपनी आलोचनाएँ भी हैं। इसके बावजूद इससे चिकित्सकों को व्यवहार का बेहतर अनुमान लगाने में सहायता मिलती है। डीएसएम-5 (DSM-5) तथा - आईसीडी-11 का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

डीएसएम **(DSM)**

डीएसएम (DSM), अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन (American Psychiatric Association- APA) द्वारा प्रकाशित एक नियमावली है जिसका सबसे व्यापक रूप से उपयोग संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य देशों में मानसिक विकारों के निदान में किया जाता है। डीएसएम का पूरा नाम मानसिक विकारों का नैदानिक एवं सांख्यिकी नियमावली (The Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders - DSM) हैं। डीएसएम वर्तमान में अपने 5वें संस्करण में है। यह सम्बन्धित लक्षणों के प्रकार, संख्या एवं अवधि सहित विभिन्न मनोवैज्ञानिक विकारों के लिए नैदानिक मानदंडों सहित श्रेणीबद्ध - वर्गीकरण प्रणाली है।

डीएसएम का इतिहास ***(History of DSM)***

संयुक्त राज्य अमेरिका में मानसिक विकारों के विषय में सांख्यिकीय जानकारी की आवश्यकता ने वर्गीकरण प्रणाली को विकसित करने के प्रयासों में क्रांति ला दी थी। 1840 की राष्ट्रीय जनगणना में मानसिक विकार की एक ही श्रेणी, 'मूर्खता / पागलपन' । का उपयोग किया गया था जबकि 1880 की जनगणना में मानसिक विकारों की सात - श्रेणियों (उन्माद, उदासी, एकरसता, पक्षाघात, मनोभ्रंश, मद्यपान एवं मिर्गी) का उल्लेखकिया गया। अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन (American Psychiatric Association- APA). (पूर्वनाम सांख्यिकी समिति) ने मानसिक स्वच्छता पर राष्ट्रीय आयोग के साथ मिलकर 1917 में मानसिक चिकित्सालयों के लिए एक नई गाइड विकसित की जिसे 'पागलों के लिए संस्थानों के उपयोग के लिए सांख्यिकी मैनुअल (Statistical Manual for the Use of Institutions for the Insane) कहकर सम्बोधित किया गया, जिसमें बाइस निदान शामिल थे। इसके बाद, APA एपीए द्वारा वर्षों में इसे कई बार संशोधित किया गया।

1952 में, डायग्नोस्टिक एंड सांख्यिकीय नियमावली को जारी किया गया था। तब से कई बार इसे अद्यतन किया जा चुका हैं। DSM-I में निदान श्रेणियों की संख्या 102 थी जो DSM-II में बढ़कर 182, DSM-III में 265, DSM-IV में 297 हो गई। डीएसएम की वैधता एक प्रमुख चिंता रही है। परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान (NIMH) ने आनुवंशिकी, इमेजिंग, संज्ञानात्मक विज्ञान और सूचना के अन्य स्तरों को शामिल करके एक नई वर्गीकरण प्रणाली के लिए आधार स्थापित करने के लिए निदान को आधुनिक बनाने के लिए अनुसंधान डोमेन मानदंड (RDoC) परियोजना शुरू किया जिसका अधिकतम झुकाव जैविकता पर होगा। 2013 में, NIMH के तत्कालीन निदेशक थॉमस इनसेल और APA के निर्वाचित अध्यक्ष जेफरी लिबरमैन के एक संयुक्त बयान में कहा गया था कि DSM-5 'मानसिक विकारों के नैदानिक निदान के लिए वर्तमान में उपलब्ध बेहतरीन

जानकारी है। उन्होंने यह कहते हुए जारी रखा कि मानसिक रोगों के वर्गीकरण और प्रबंधन के लिए, DSM-5 और RDOC दोनों "पूरक, प्रतिस्पर्धी नहीं, रूपरेखा" प्रदान करते हैं। APA ने मार्च 2022 में पाँचवें संस्करण का संशोधित संस्करण जारी किया। उस संस्करण को DSM-5-TR के रूप में जाना जाता है, जिसमें TR का अर्थ है 'पाठ संशोधन।' इसके अतिरिक्त, APA ऐसी पुस्तकें भी प्रकाशित करता है जो DSM-5-TR की सामग्री को पूरक बनाती हैं। इन पूरक प्रकाशनों के उदाहरणों में DSM-5 हैंडबुक ऑफ डिफरेंशियल डायग्नोसिस और DSM-5 क्लिनिकल केस शामिल हैं।